REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 4 | JANUARY - 2019

उत्तराखण्ड प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या के पलायन का भौगोलिक अध्ययन

डॉ. गुरूप्रसाद थपलियाल
एसिसटेन्ट प्रोफेसर एवं श्री प्रमोद सिंह, एसिसटेन्ट प्रोफेसर राजकीय महाविद्यालय अगरोड़ा टिहरी गढ़वाल उत्तराखण्ड.

प्रस्तावना :

जनसंख्या पलायन का इतिहास उतना ही प्राचीन है जितना स्वयं मानव का। संसार के जिस भाग में जिस समुदाय अथवा प्रजाति के लोग रहते है उनके पूर्वज वहां नहीं रहते थे। बल्कि वे वहां अन्यत्र स्थान से स्थानान्तरित होकर आये थे। मानव प्रराम्भिक काल से लेकर वर्तमान समय तक अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति, सुरक्षा, रोजगार , शिक्षा तथा जीवन के लिए जरूरी संसाधनों की पूर्ति के लिये पलायन करता रहा है। मानव विकास के साथ–साथ पलायन का स्वरूप, अर्थ, उद्देश्य भी बदलते रहे है। इसका कारण मनुष्य की समय के साथ बदलती मानसिकता व आवश्यकताएं रही है । प्रारम्भिक समय में उत्तराखण्ड में अन्तः पलायन के कारण बस्तियों का विकास हुआ, कृषि व पशुपालन कार्य विकसित हुये एवं आत्मनिर्भर मूलक अर्थव्यस्था का प्रादुर्भाव हुआ, यहां आर्यो के आगमन एवं विभिन्न शासकों के काल में, धार्मिकता एवं राजनैतिक आधार पर अन्त पलायन की प्रक्रिया से जनसख्या में वृद्धि हुयी। गोसल (1961) के अनुसार पलायन मात्र स्थान परिवर्तन ही नहीं बल्कि किसी क्षेत्र तत्व तथा क्षेत्रीय सम्बन्धों को समझने का प्रमुख आधार है।

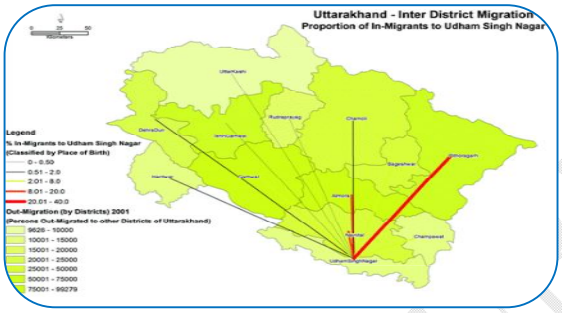

अध्ययन क्षेत्र : उत्तराखण्ड प्रदेश $28^0 7''$ उत्तरी अक्षांश से, $31^0 4''$ उत्तरी आक्षांश, तथा $77^0 7''$ पूर्वी आक्षांश से $81^0 1''$ पूर्वी देशान्तर के बीच स्थित है, उत्तराखण्ड प्रदेश 53483 वर्ग किमी0 क्षेत्र में फैला हुआ है। उत्तराखण्ड की कुल जनसंख्या 2011 के अनुसार 10086292 है, जिसमें नगरीय जनसंख्या 3049338 तथा ग्रामीण जनसंख्या 7036954 हैं।

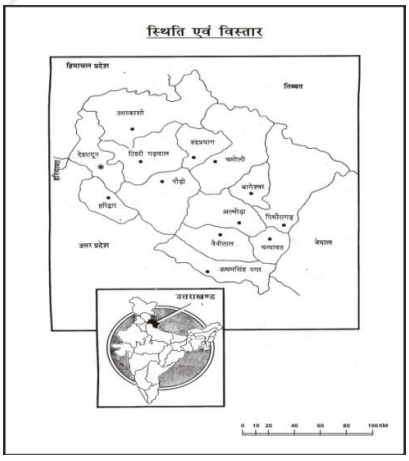

विधितन्त्र – प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्त्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक श्रोत में साक्षात्कार, क्षेत्र भ्रमण से एकत्रित किये गये एवं द्वितीयक स्त्रोत में पलायन अयोग उत्तराखण्ड अर्थ–साख्यंकी विभाग से प्राप्त किये गये हैं।

जनसंख्या पलायन – उत्तराखण्ड में आर्यो का आगमन पंजाब तथा गंगा के मैदानी भागों से होता रहा। ये लोग पर्वतीय क्षेत्रों में आकर बस गये, एटकिन्सन के अनुसार विष्णुपुराण, महाभारत, बारहीसंहिता के प्रमाणों के आधार पर शक, नाग, हूण, खस, किरात, कमयु जातियां मूलरूप से इस प्रदेश में निवास करती थी। हवीलर के अनुसार नागपूजक, नागजाति अलकनन्दा घाटी में निवास करती थी। आज भी प्रदेश के अधिकांश पर्वतीय गाँवों में नागराजा की स्थापना देखने को मिलती है। वैदिक काल, मुगलकाल, गोरखाकाल, ब्रिटिश काल, स्वतंत्रता के बाद भी उत्तराखण्ड प्रदेश में पलायन होता रहा है। जिससे उत्तराखण्ड में धीरे–धीरे जनसंख्या में वृद्धि होती गयी। प्रदेश में धार्मिक पर्यटक स्थल एवं प्रकृतिक पर्यटक स्थलों से भी जनसंख्या वृद्धि हुई है। उत्तराखण्ड प्रदेश में वर्तमान समय में पलायन विभिन्न क्षेत्रों में हो रहा है। उत्तराखण्ड पलायन आयोग की रिपोर्ट 2018 के अनुसार प्रदेश के विभिन्न क्षेत्र में हुऐ पलायनों का प्रतिशत निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका संख्या 1.1 उत्तराखण्ड प्रदेश के ग्रामीण जनसंख्या का पलायन विभिन्न क्षेत्रों में वर्ष 2018

क्र.सं.	क्षेत्रों का नाम	पलायन का प्रतिशत
1	नजदीकीय कस्बे	19.41
2	जिला मुख्यालय	15.11
3	राज्य के दूसरे जिलों में	35.48
4	देश के अन्य राज्यों में	29.00
5	देश से बाहर	1.00

स्त्रोत– पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

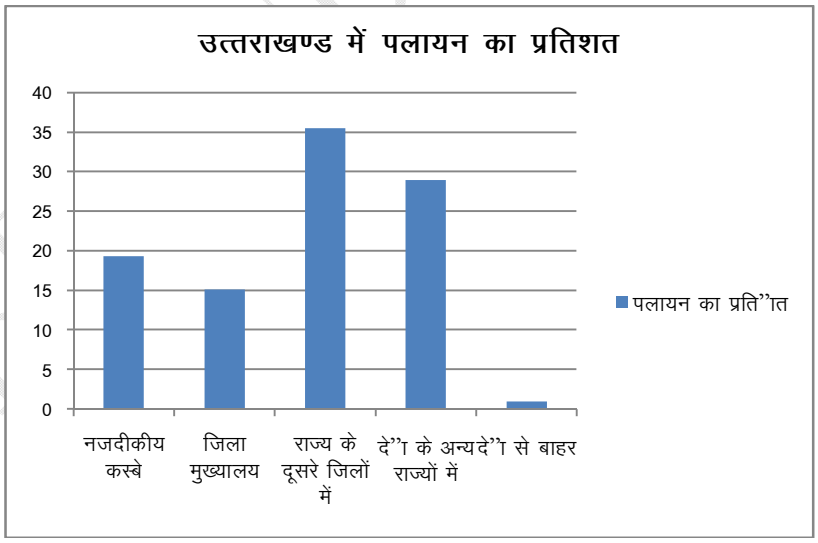

तालिका संख्या 1.1 में प्रदर्शित आकडों के अनुसार उत्तराखण्ड में सबसे अधिक पलायन राज्य के अन्य जिलों में 35.48 प्रतिशत हुआ है। दूसरे स्थान पर पलायन देश के अन्य राज्यों में 29 प्रतिशत पलालन हुआ, नजदीकीय कस्बों में 19.41 प्रतिशत पलायन हुआ है, उत्तराखण्ड राज्य बनने के बाद राज्य में छोटे–छोटे कस्बों का विकास हुआ है। प्रदेश के जिन स्थानों में, दो या दो से अधिक स्थानों के लिये सड़क मार्गो का विकास

हुआ है, उन स्थानों में आस पास के गाँव के लोग वहां बसने लगे। इन क्षेत्रों में आबादी बढ़ने से कस्बों का विकास हुआ।जैसे चम्बा टिहरी गढवाल, तिलवाडा, अगस्त्यमुनी, विजयनगर, मयाली, मदननेगी, लम्बगांव, आदि, जिसम चम्बा टिहरी गढवाल,तिलवाडा,अगस्त्यमुनी,विजयनगर,मयाली,,लम्बगांव कस्बो को नगर पंचायत हो गयी है। देश से बाहर रोजगार के लिये ग्रामीण क्षेत्रों से 1 प्रतिशत लोगों का पलायन हुआ। उत्तराखण्ड प्रदेश में जनसंख्या पलायन को प्रभावित करने वाले निम्नलिखित कारक हैं–

1. भौतिक कारक– भौतिक कारकों में जलवायु का सबसे महत्वपूर्ण स्थान हैं। जलवायु परिवर्तन से मानव जाती का पलायन हुआ है। उत्तराखण्ड प्रदेश में भौतिक कारक में धरातली स्वरूप एवं जलवायु परिवर्तन से भी पलायन हुआ है। प्रदेश के ऊँचे क्षेत्रों से घाटियों में पलायन तथा घाटियों से ऊँचे क्षेत्रों में पलायन जलवायु परिवर्तन के कारण ही होता है।
2. आर्थिक कारक – जनसंख्या पलायन में सबसे महत्वपूर्ण कारक आर्थिकता का हैं। मानव की बढ़ती हुई आवश्कताओं से मानव अपने आर्थिक विकास के लिये पलायन कर रहा है। उत्तराखण्ड प्रदेश में कृषि एवं पशुपालन मुख्य व्यवसाय है। कृषि में कम पैदावार का होना जिसका मुख्य कारण समय पर वर्षा का कम होना है। क्योंकि यहां अधिकांश कृषि वर्षा पर निर्भर रहती है। पशुओं में भी निरन्तर कमी हो रही है, जिसका मुख्य कारण चारागाह क्षेत्रों की कमी होना है। प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों के युवा रोजगार की तलाश में समीपवर्ती तथा बडे नगरो के लिये पलायन करते है। जिससे कुछ ग्रामीण युवा वही स्थायी रूप से बस जाते हैं। उत्तराखण्ड़ प्रदेश में विभिन्न समस्याओं से पलायन हो रहा है जो तालिका संख्या 1.2 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका संख्या 1.2 उत्तराखण्डं प्रदेश में विभिन्न समस्यों से पलायन का प्रतिशत वर्ष 2018

क्र.सं.	पलायन विभिन्न क्षेत्रों में	प्रतिशत
1	रोजगार एवं आजीविका की समस्या से पलायन	50.17
2	चिकित्सा सुविधा के अभाव से पलायन	8.83
3	शिक्षा सुविधा के अभाव से पलायन	15.21
4	सड़क, बिजली, पानी की कमी से पलायन	3.74
5	कृषि भूमी में पैदावार की कमी से पलायन	5.44
6	सगे सबंन्धियों के देख–भाल से पलायन	2.52
7	जंगली जानवरों के भय से पलायन	5.61
8	अन्य कारणों से पलायन	8.48

स्त्रोत– पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

LBP PUBLICATION

उत्तराखण्ड प्रदेश में पलायन के कारण बीरान मकान

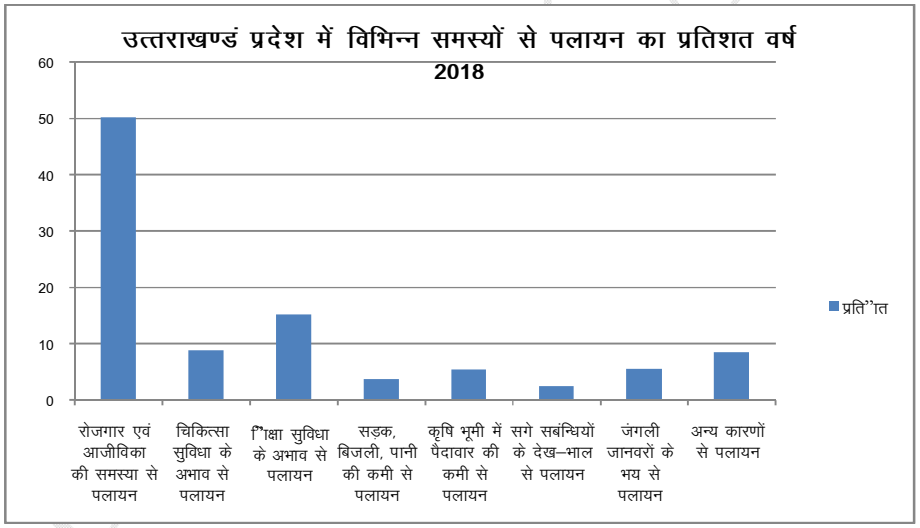

(1)उत्तराखण्ड प्रदेश में सबसे अधिक पलायन रोजगार एवं आजीविका के लिये 50.17 पलायन हुआ है । जिसका मुख्य कारण उद्यौगो की कमी, रोजगार सजृन में कमी है। उत्तराखण्ड में प्राकृतिक संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध हैं। इन संसाधनों के वैज्ञानिक तरीके से उपयोग किया जाय, जड़ी बूटी उद्योगों का विकास किया जाय, स्थानीय कृषि पैदावार के बढ़ावा दिया जाय, पर्यटन के क्षेत्र में विकास किया जाय, विपणन की व्यवस्था की जाय, कोल्ड स्टोरेज का विकास किया जाय, तो प्रदेश के पलायन में कुछ कमी आ सकती हैं।

(2) उत्तराखण्ड प्रदेश में चिकित्सा की कमी के कारण 8.83 प्रतिशत पलायन हुआ। प्रदेश में चिकित्सालयों का विकास तो हैं लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कुशल चिकित्सकों की कमी बनी हुयी है जिससे पलायन हो रहा है। सरकार को विशेष योजनाओ के तहत कुशल चिकित्साकों की नियुक्ति करनी चाहिये। जिससे पलायन में कमी आ सके।

(3) उत्तराखण्ड प्रदेश में शिक्षा के विकास में कई योजनाएं चलाई जा रही है। लेकिन उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा की कमी के कारण प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन हो रहा है। प्रदेश में उच्च शिक्षा, व्यवसायिक शिक्षा, तकनीकी शिक्षा का विकास किया जाय तो पलायन में कमी आ सकती है।

(4) सड़क, बिजली, पानी से उत्तराखण्ड प्रदेश में 3.74 प्रतिशत पलायन हुआ, राज्य सरकार ग्रामीण क्षेत्रों को सड़क मार्गों जोड़ने के लिए कई योजनाओं के द्वारा सड़कों क निर्माण किया गया है। लेकिन पर्वतीय क्षेत्रों के ग्रामीण बस्तियां विखरी हुयी हैं। जिससे प्रत्येक गाँव को सड़क मार्ग से जोड़ा नहीं जा सकता। क्योंकि यह पर्वतीय क्षेत्र हैं। यहां कुछ गाँव की जनसंख्या 100 से भी कम हैं। प्रत्येक गाँव के लिए सड़क मार्ग का निर्माण किय गया तो हिमायलय क्षेत्र के पर्यावरण के अनुकूल नहीं होगा। जो सड़क प्रदेश में बनी हैं, उनका रख–रखाव अच्छा हो तथा वर्षा काल में बधित न हो ऐसी योजना बनाई जानी चाहिये।

(5) कृषि भूमि में पैदावार की कमी के कारण उत्तराखण्ड प्रदेश में 5.44 प्रतिशत पलायन हुआ है। जिसका मुख्य कारण समय–समय पर वर्षा का नहीं होना हैं। क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों की अधिकांश कृषि भूमि असिंचित हैं। राज्य सरकार को कृषि विकास के लिए इन क्षेत्रों में फलोउद्यान, चाय बगवान, सम्बन्धित प्रशिक्षण ग्रामीणों को देना चाहिए, जिससे पलायन में कमी हो सके।

(6) उत्तराखण्ड प्रदेश में जंगली जानवरों के भय एवं नुकसान से प्रदेश में 5.61 प्रतिशत पलायन हुआ हैं। उत्तराखण्ड प्रदेश के पर्वतीय ग्रामीण क्षेत्रों में जंगली सुअरों, बन्दरों, बाघों, भालुओं, पक्षियों से परेशान होकर भी पलायन अधिक हो रहा है। क्योंकि जानवर फसलों को भारी नुकसान पहुचा रहे हैं। बाघ कई मवेशियों एवं व्यक्तियों को अपना शिकार बनातें हैं। प्रदेश में इन जानवरों की अधिक वृद्धि हुई हैं। जिसका मुख्य कारण सरकार द्वारा जगंली पशुओं को मारना प्रतिबन्ध है। तालिका संख्या 3.3 में उत्तराखण्ड प्रदेश के विभिन्न जनपदों में जानवरों के भय से निम्नलिखित पलायन को प्रदर्शित किया गया है –

तालिका संख्या 3.3 उत्तराखण्ड प्रदेश के विभिन्न जनपदों में जंगली जानवरों से पलायन 2018

क्र.सं.	जनपद	जंगली जानवरों के भय से पलायन प्रतिशत
1	उत्तरकाशी	4.04
2	चमोली	3.09
3	रूद्रप्रयाग	5.11
4	टिहरी	4.26
5	पौडी गढ़वाल	6.27
6	पिथोरागढ़	4.08
7	बागेश्वर	3.42
8	अल्मोड़ा	10.99
9	चंम्पावत	6.65
10	नैनीताल	6.38
11	उधमसिंह नगर	2.60
12	हरिद्वार	.83
13	देहरादून	1.62

स्त्रोत अमर उजाला दैनिक न्यूज पेपर दिनांक 4 मई 2018

उपरोक्त तालिका 3.3 में प्रर्दशित आंकड़ों के अनुसार उत्तराखण्ड प्रदेश के अल्मोड़ा जनपद में सबसे अधिक 10.99 प्रतिशत जंगली जानवरों के भय से पलायन हुआ है। चम्पावत जनपद में 6.35 प्रतिशत, नैनीताल जनपद में 6.38 प्रतिशत, पौडी गढ़वाल में 6.27 प्रतिशत पलायन हुआ है। प्रदेश के सबसे कम जानवरों के भय से पलायन हरिद्वार जनपद मे .83 प्रतिशत हुआ है, जबकि देहरादून जनपद में 1.62 प्रतिशत हुआ है। उधमसिंह नगर में 2.60 प्रतिशत हुआ है।

(7) सगे सम्बन्धियों के देख–रेख से भी उत्तराखण्ड प्रदेश में 2.52 प्रतिशत पलायन हुआ है। जिसका मुख्य कारण यहां अधिकतम परिवारों में एक या दो बच्चे का होना है, जो रोजगार के लिये अन्य क्षेत्रों में है, इनकी देख–रेख या अपनी देखभाल करने के लिये बुर्जुग इनके साथ चले जाते हैं तथा वही निवास करने लग जाते हैं। जिससे यहां पलायन हो रहा है।

(8) अन्य कारणें से भी उत्तराखण्ड प्रदेश में 8.48 प्रतिशत से पलायन हो रहा है। जैसे व्यापार, राजतीतिक, पर्यटन के क्षेत्र आदि अन्य कारणों से प्रदेश में पलायन हो रहा है।

(9) जनसंख्या पलायन में सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का विशेष महत्व है। सामाजिक प्रभाव, रीति–रिवाज, धार्मिक मान्यताऐं, पलायन को प्रभावित एवं नियत्रित करते हैं। उत्तराखण्ड प्रदेश में धार्मिक स्थलों की अधिकता से देश एवं प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से अस्थायी एवं स्थायी पलायन हो रहा है।

(10) राजनीतिक कारणों से पलायन – प्रदेश में राजनीतिक कारण से भी पलायन हो रहा है। उत्तराखण्ड राज्य गठन के बाद देहरादून में प्रदेश की राजधानी होने के कारण यहां राजनीति पलायन आधिक हुआ है।

तालिका संख्या 3.4 में उत्तराखण्ड प्रदेश के विभिन्न जनपदो में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या को प्रदर्शित किया गया हैं। क्योंकि उत्तराखण्ड प्रदेश के अधिकांश पलायन ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों में हुआ है। उत्तराखण्ड प्रदेश के रूद्रप्रयाग जनपद में वर्ष 2001 में नगरीय जनसंख्या 1.20 थी, जबकि 2011 में नगरीय जनसंख्या 4.10 हो गयी है। जनपद में 10 वर्षो में कुल 2.90 प्रतिशत नगरीय जनसंख्या की वृद्धि हुयी है। उत्तराखण्ड प्रदेश के उत्तरकाशी जनपद में 10 वर्षो में नगरीय जनसंख्या .43 प्रतिशत की कमी हुयी है। जबकि ग्रामीण जनसंख्या में .43 प्रतिशत की वृद्धि हुयी है। उत्तराखण्ड प्रदेश में सबसे अधिक नगरीय जनसंख्या वृद्धि हरिद्वार जनपद में 5.8 प्रतिशत हुयी है। जबकि ग्रामीण क्षेत्र में 5.85 प्रतिशत की कमी हुयी। उत्तराखण्ड प्रदेश में नगरीय क्षेत्रों में जनसंख्या 10 वर्षो मं 15.55 प्रतिशत की वृद्धि हुई, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों मं 15.55 प्रतिशत की कमी हुई है।

तालिका संख्या 3.4 उत्तराखण्ड प्रदेश की ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत

		वर्ष 2001		वर्ष 2011		प्रदेश के 10 वर्षो में नगरीय एवं ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि एवं कमी प्रतिशत में	
क्र.सं.	जनपदों के नाम	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत
1	अल्मोड़ा	8.56	91.44	10.01	89.99	1.45	–1.45
2	रूद्रप्रयाग	1.20	98.80	4.10	95.90	2.9	–2.9
3	पौडी गढ़वाल	12.95	87.05	16.40	83.60	3.45	–3.45
4	बागेश्वर	3.13	96.87	3.49	96.51	.36	–.36
5	टिहरी गढ़वाल	9.67	90.33	11.33	88.67	1.66	–1.66
6	पिथौरागढ़	12.15	87.85	14.40	85.60	2.25	–2.25
7	चम्पावत	14.59	85.41	14.77	85.23	.18	–.18
8	चमोली	13.43	86.57	15.17	84.83	1.78	–1.78
9	उत्तरकाशी	7.79	92.21	7.36	92.64	..43	.43
10	नैनीताल	35.36	64.64	38.94	61.06	3.58	–3.58
11	उधमसिंह नगर	32.66	67.37	35.58	64.42	2.95	–2.95
12	देहरादून	52.96	47.06	55.52	44.48	2.58	–2.58
13	हरिद्वार	30.86	69.14	36.66	63.34	5.8	–5.8
योग प्रदेश का		14.68	85.32	3023	69.77	15.55	–15.55

उत्तराखण्ड प्रदेश में जनसंख्या पलायन के प्रकारा – समयावधि के आधार पर पलायन के तीन मुख्य कारण है (1) दीर्घकालीन पलायन, अल्पकालीन पलायन या मौसमी पलायन उत्तराखण्ड प्रदेश में मुख्य रूप से दो पलायन देखने को अधिक मिले है। दीर्घकालीन पलायन(स्थायी पलायन) अल्पकालीन पलायन (अस्थायी पलायन) दैनिक पलायन प्रदेश के प्रत्येक क्षेत्रों में होता है। लोग अपनी आवश्यकता की समाग्री के लिये नजदकीय सेवा केन्द्रों में जाते हैं प्रदेश के सेवा केन्द्रो में आने–जाने से प्रदेश में दैनिक पलायन हो रहा है।

(1) स्थायी पलायन– स्थायी पलायन जिसका कोई निश्चित समय नही होता है। उत्तराखण्ड प्रदेश में दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, उत्तर–प्रदेश आदि अनेक राज्यों से आकर लोग बसे हैं। उत्तराखण्ड से बडी संख्या में लोग दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, हिमाचल–प्रदेश, चण्डीगढ़, आदि अनेक राज्यों रोजगार हेतु पलायन हुआ है। प्रदेश में पलायन का अध्ययन करने के लिये स्थायी पलायन उन्हें कहा गया जो 10 सालों में जो लोग पूरी तरह से पलायन कर चुके हैं। जो अपनी जमीन बेच चुके हैं। जो घर नहीं आते हैं। तालिका संख्या 3.5 में उत्तराखण्ड प्रदेश के विभिन्न जनपदों में स्थायी एवं अस्थायी पलायन को प्रदर्शित किया गया है।

तालिका 3.5 उत्तराखण्ड प्रदेश के विभिन्न जनपदों में 10 वर्षो में पलायन वर्ष 2018

क्र.सं.	जनपदों के नाम	अस्थायी पलायन	स्थायी पलायन
1	उत्तरकाशी	19893	2727
2	चमोली	32020	14289
3	रूद्रप्रयाग	22735	7835
4	टिहरी गढ़वाल	71509	18830
5	पौडी गढ़वाल	47488	25584
6	पिथौरागढ़	31786	9883
7	बागेश्वर	23388	5912
8	अल्मोड़ा	53611	16207
9	चम्पावत	20332	7886
10	देहरादून	25781	2802
11	उधमसिंह नगर	6064	952
12	हरिद्वार	8168	1251
13	नैनीताल	20951	4823
कुल योग		383726	118981

स्त्रोत– पलायन आयोग उत्तराखण्ड 2018

तालिका संख्या 3.5 में उत्तराखण्ड प्रदेश के पर्वतीय जनपदों में सबसे अधिक स्थायी पलायन पौडी गढ़वाल में 25584 व्यक्तियों का हुआ है। जबकि मैदानी जनपदों में स्थायी पलायन सबसे कम उधमसिंह नगर में 952 व्यक्तियों का हुआ हैं, स्थायी पलायन सबसे कम जनपद उत्तरकाशी में 2727 व्यक्तियों का हुआ, अस्थायी पलायन सबसे अधिक जनपद टिहरी गढ़वाल में 71509 व्यक्तियों का पलायन हुआ, सबसे कम अस्थायी पलायन जनपद उधमसिंह नगर में 6064 व्यक्त्यिों का पलायन हुआ हैं। उत्तराखण्ड प्रदेश में 2018 तक 10 वर्षो में कुल 383726 लोगो ने अस्थायी पलायन किया हैं, जबकि स्थायी पलायन 118981 व्यक्तियों ने किया हैं।

रोजगार के लिये पलायन– उत्तराखण्ड पलायन अयोग रिपोर्ट के अनुसार 10 वर्षो के अन्तर्गत 26 से 30 आयु वर्ग के 42.25 प्रतिशत लोगों ने पैत्रिक गाँव छोड़ा है। 25 साल से कम आयु वर्ग के 28.66 प्रतिशत युवाओं ने बेहतर उच्चशिक्षा व अजीविका के लिये पलायन किया, पलायन अयोग रिपोर्ट के अनुसार हरिद्वार, चम्पावत, नैनीताल, चमोली, उधमसिंह नगर जनपद के 26 से 35 आयु वर्ग के युवाओं का पालयन अधिक हुआ

है। 10 सालों में इस आयु वर्ग के युवाओं ने 42.25 प्रतिशत पलायन किया है। 25 से कम युवाओं ने 28.60 प्रतिशत तथा 35 से अधिक युवाओं ने 29.09 ने प्रतिशत पलायन किया है।

अस्थायी पलायन – उत्तराखण्ड प्रदेश में अस्थायी पलायन अधिक हो रहा है। जिनकी अवधि कुछ समय के लिये होती है। जो कुछ दिनों या महीनों के भीतर अपने मूल स्थान को लौट आते हैं। जैसे तीर्थयात्रा, देशाटन, सदभावना यात्रा, राजनीति उदेश्यों व्यापार सम्बन्धित शिक्षाा सम्बन्धित आदि उत्तराखण्ड प्रदेश में अस्थायी पलायन उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में भी अधिक होता है। उच्च पर्वतीय क्षेत्रों के लोग ग्रीष्म ऋतु में उँचे भागों में रहते हैं।ग्रीष्म काल में यहां मौसम अनुकूल रहता है। तथा पशुओं के लिये प्रयाप्त चारागाह उपलब्ध रहते हैं, पशुचारक इन्हीं स्थानों में आते हैं, तथा 6 माह तक यहां रहते हैं, शीतकाल में उँचे पर्वतीय क्षेत्रों के कुछ लोग घाटियों में आ जाते हैं, तथा कुछ लोग तराई भागों में चले जाते हैं।

निष्कर्ष

उत्तराखण्ड प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन को रोकना सरकार के लिये वड़ी चुनौती है। प्रदेश में प्रत्येक दिन 33 लोगों का पलायन रहा है। यदि प्रदेश के अस्थायी पलायन को जोड़ दिया जाय तो 165 लोग प्रति दिन पलायन कर रहें हैं। अलग राज्य गठन के बाद भी रोजगार, स्वास्थ, शिक्षा सुविधाओं के लिये 30 प्रतिशत ग्रामीणों ने देश के विभिन्न राज्यों एवं विदेशों में जीवन यापन कर रहे है। 70 प्रतिशत ग्रामीण लोग ऐसे हैं। जिन्होने पैत्रिक गाँव छोडकर प्रदेश के भीतर ही सुविधाजनक स्थानों में पलायन किया है। 3946 ग्राम पंचायतों से 10 वर्षो में 1 लाख 18 हजार 981 लोगों ने स्थायी रूप से पलायन कर दुसरे स्थानों में जाकर बसे है, उत्तराखण्ड प्रदेश के लोगों की आजीविका कृषि, मजदूरी, उद्यान, डेयरी सरकारी सेवा व अन्य कार्य है।जिसमें 43.59 प्रतिशत कृषि 32.22 प्रतिशत मजदूरी, 2.11 प्रतिशत उद्यान, 2.64 प्रतिशत डेयरी, 10.83 प्रतिशत सरकारी सेवाओं तथा 8.61 प्रतिशत अन्य कार्यो में सलग्न हैं। सरकार द्वारा कृषि उधान डेयरी के लिए विशेष योजना बनानी चाहिए, कृषि बढावा के लिए बदलती हुई जलवायु के अनुरूप कृषि का विकास के लिये योजना बनानी चाहिए, उधानों के विकासों लिए विशेष योजना बनानी चाहिए, क्योकि उद्यानों के लिए प्रदेश में अनुकुल जलवायु उपलब्ध है। जो प्रदेश के पलायन बेरोजगारी रोकने में कारगर सिद्ध हो सकते हैं, उत्तराखण्ड प्रदेश में शिक्षित बेरोजगारों की संख्या बढती जा रही है। उत्तराखण्ड प्रदेश में शिक्षित बेरोजगारी का आंकडा 9 लाख है। 13 जनपदों में 531174 पुरूष बेरोजगार 338588 महिलाये बिरोजगार पंजीकृत है। राज्य सरकार को लधु उद्योगों की स्थापना, सरकारी रिक्त पदों में भर्तीयां, स्वरोजगार के लिए प्रेरित एवं वित्तीय सहायता कर के बेरोजगारी में कमी की जा सकती है। प्रदेश के 10 वर्षों में पलायन के कारण 734 गॉवों में आबादी नहीं है, जो राज्य एवं देश हित में सही नही है क्योकि उत्तराखण्ड प्रदेश की सीमायें चीन देश से जुडी है, सीमावर्ती गॉव से पलायन होने से गॉव बिरान हो जायेगे जिससे बाहरी देशों की गतिविधियों सीमाओं में अधिक बड जायेगी क्योकि स्थानीय लोग प्रति दिन पशुचारण हेतु सीमाओं तक जाते है, सीमाओं में होने वाली गतिविधियों को शासन एवं प्रशासन को अवगत कराते हैं, जिससे सीमाओं पर तैनात सैनिकों को सूचना मिलने में मद्द मिलती है। केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार को ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए विशेष योजनाये बनायी जानी चाहिए जिससे यहां का पलायन रूक सके।

सन्दर्भ

1. Clarke, Johan I. (1972) : Pupulation Geography, Pergomon Press, Oxford.
2. Chandra, R.C. (1980): Introduction to population Geography, Kalyani publication, New Delhi.
3. Maurya, S.D., (19): Population Geography, Sarda pustak Bhawan Allahabad.
4. Chandana, R.C., (1906) : Geography of population Concept, Determinants and Pattern, Kalyani publication, New Delhi.
5. Trewarth, G.T. (1959): A Geography of population world patterns, John willay & wiley & Sons, New York.
6. Pant, B.R. & Chand, R. (2014): Uttarakhand Jansankhyatmale Jhalak,

7. Singh, R.N. & Maurya, S.D. (2004): Pauri Garhwal 2013: Encyclopaedia of Geography.
8. Parikn Kirit S(ed) 1997- Indian Development Report 1997 IGIDR Oxford university press. New Delhi.
9. Ackerman Edward A 1970 "Population Natural Resources and Technology" in population geography, hill book company new York.

LBP PUBLICATION